IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेस के विकास की पृष्ठभूमि में भारतीय स्वंतत्रता आन्दोलन

1. डोली शर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग
2. डॉ. राघवेन्द्र यादव (सहायक आचार्य)
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
धर्मशाला (हि.प्र.)-177101

सारांश :- 18वीं एवं 19वीं शताब्दी के बीच की अवधि न केवल आरंभिक बल्कि राजनीतिक चेतना एवं भारतीय राष्ट्रवाद की किशोरावस्था का काल देखा गया है | इस समय में प्रेस ने सामाजिक धार्मिक सुधार शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | इसके अलावा यही वह वर्ग था जिसने राजनीतिक क्षेत्र के अग्रदूतों को राजनीतिक जागृति और राष्ट्रीय आंदोलन का उदय करने के लिए सबसे प्रभावी रूप में प्रेस को हथियार बनाकर कार्य किया | मास मीडिया प्रेस ने राजनीतिक संगठनों के निर्माण और प्रचार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | निसंदेह भारतीय प्रेस ने कट्टरपंथी विचारों के प्रचार के माध्यम के रूप में काम किया और सुधारवादी एवं राष्ट्रवादी विचारों की एक बढ़ती हुई संस्था का गठन किया और ऐसे कई सामाजिक मुद्दों को जीवित रखा जिसमें कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, अस्पृश्यता, अंधविश्वास और ब्रिटिश सरकार की आधिकारिक फिजूलखर्ची, जैसे मुद्दे यूरोपीय समुदाय में सेवाओं का भारतीयकरण, विधायी संस्था में भारतीय प्रतिनिधित्व कई समाचार पत्र पत्रिकाएं सामने आई जिन्होंने 18वीं एवं19वीं शताब्दी के विभिन्न सामाजिक धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और बौद्धिक गतिविधियों के उद्भव के कारण देश के कुछ हिस्सों में विशेष रूप से बंगाल और तमिलनाडु में औपनिवेशिक सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य किया | इस पत्र में भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेस की भूमिका में विभिन्न समाचार पत्रों से संबंधित संपादकों एवं राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित विभिन्न समाचार पत्र तथा इन पत्रों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक बदलाव और किस प्रकार प्रेस ने लोगों में राजनीतिक चेतना तथा उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागृत करने में भूमिका निभाई इसका उल्लेख किया जाएगा।

मुख्य शब्द :- भारतीय राष्ट्रवाद, प्रेस, स्वंतत्रता आन्दोलन, संपादक, सामाजिक – राजनितिक चेतना, ब्रिटिश, समाचार पत्र।

भूमिका :- समाचार पत्र सूचना प्रसारित करने का मुख्य स्रोत है। समाचार पत्र का उद्देश्य लोकप्रिय भावनाओं को समझना एवं उसे अभिव्यक्ति देना है, अथवा भावनाएं जागृत करना तथा निडर होकर लोकप्रिय देशों को उजागर करना | समाचार पत्र ऐसे तथ्य और विश्लेषण प्रदान करने का प्रयास करते हैं जो नागरिकों को एक जटिल सूचना शक्ति समाज में प्रभावी और जिम्मेदार निर्णय लेने की अनुमति देते हैं |आधुनिक समाज में एजेंडा निर्धारकों के रूप में समाचार पत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | समाचार पत्रों ने सामाजिक मुद्दों पर विचार कर उन मुद्दों को प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | समाचार वितरण की गति तकनीक और प्रकृति अब बदल गई है लेकिन समाचार पत्रों का मूल उद्देश्य निरंतर और स्थाई बना हुआ है।

भारतीय प्रेस ने राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता का उदय करने के साथ- साथ आरंभिक संघ या सोसाइटियों के माध्यम से जनता को एकजुट करने में भी भूमिका निभाई। सन 1858 एवं 1919 के बीच की अवधि न केवल प्रेस के प्रसार में आरंभिक बल्कि जोरदार भी देखी गई है क्योंकि यह भारतीय राष्ट्रवाद की अवस्था का काल था जिसमें प्रेस ने सामाजिक एवं धार्मिक सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इसके अलावा यही वह वर्ग था जिसने राजनीतिक क्षेत्र के अग्रदूतों को जागृति प्रदान की एवं सबसे प्रभावी रूप में राजनीतिक संगठनों के निर्माण और प्रचार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | भारतीय प्रेस ने उस समय के सामाजिक मुद्दों की बहस को जीवित रखा जैसे कि 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज में कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, महंगी विवाह प्रथा, अस्पृश्यता, अंधविश्वास और ब्रिटिश सरकार की आधिकारिक फिजूल खर्ची कराधान जैसे मुद्दे और यूरोपीय समुदाय सेवाओं का भारतीयकरण और विधायी संस्था में भारतीय प्रतिनिधित्व आदि से संबधित कई समाचार पत्र पत्रिकाएं सामने आई जिन्होंने इस कालखंड में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और भौतिक गतिविधियों के उद्भव के कारण देश में जागृति पैदा की |

प्राचीन काल में शासक वर्ग सूचना एकत्रित करने के प्रति उत्सुक रहते थे क्योंकि यह प्रशासन के लिएआवश्यक था तथा लोगों के लिए जानकारी प्राप्त करने का एक प्रमुख साधन था | प्रारंभिक हिंदू शासक कई जासूस भी रखते थे जिससे कि राज्य प्रयोजनों के लिए समाचारों के संग्रहण और प्रसारण की प्रणाली तैयार की जाए एवं कई तरह की सूचना एकत्रित की जा सके, यह जासूस न केवल राज्य के भीतर बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी प्रशासन और राजनीतिक महत्व के लिए एवं जनसंचार के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे | जैसे कि **इतिहासकार उर्पिंदर सिंह ने अपनी पुस्तक " प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास" पृष्ट संख्या 369** में वर्णित किया है कि अशोक जैसे महान सम्राट ने अपने शिलालेख संख्या 6(गिरनार संस्करण) में प्रतिवेदक एवं रिपोर्टर का उल्लेख किया है एवं प्रतिवेदक को निर्देश दिया गया है कि जनता से जुड़े किसी भी विषय को किसी भी समय सम्राट के पास रखे। इस शिलालेख से यह स्पष्ट है कि उस समय राजा के लिए प्रजा के कल्याण से अति महत्वपूर्ण अन्य कोई भी कार्य नहीं था | प्राचीन भारत में इसके अलावा कई ऐसे जासूसों या प्रतिवेदक का उल्लेख है जिन्होंने भारत तथा भारत के बाहर अन्य कई राज्यों में जनसंचार तथा कई महत्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान किया | इस प्रकार जनसंचार प्राचीन काल से ही प्रचलित था परंतु आधुनिक काल में प्रेस ने इसके निर्माण एवं प्रचार - प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | प्रेस का उद्भव प्राचीन काल में जासूस और संचार प्रणालियों के रूप में हुआ परन्तु स्याही और कागज के आविष्कार से समाचार पत्र का महत्व स्पष्ट रूप में सामने आया लेकिन ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से एवं स्थानीय भाषाओं में प्रकाशित समाचार पत्रों ने लोगों में रुचि पैदा की और यह प्रचलन बढ़ता ही चला गया | इस प्रकार भारतीय प्रेस ने राष्ट्रीय आन्दोलन में निसंदेह कट्टरपंथी विचारों के रूप में काम किया और सुधारवादी तथा राष्ट्रवादी विचारों को प्रसारित करने में एक संस्था के रूप में कार्य किया |

19वी शताब्दी में प्रेस प्रचार का माध्यम :- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध भारत में प्रेस दो भागों में बंट गई थी। भारत के प्रमुख शहरी केन्द्रों में कई एंग्लो इंडियन भारतीय सामाजिक मुद्दों वाले समाचार पत्र स्थापित किए गए और उन्हें राष्ट्रीय आवाज के रूप में मान्यता दी गई लेकिन उनका प्रसार छोटा था और केवल कुलीन वर्ग द्वारा ही पढ़ा जाता था | जबकि एंग्लो इंडियन प्रेस भारत में एंग्लो इंडियन समुदाय का प्रतिनिधित्व करता था और इस प्रेस को ब्रिटिश सरकार का संरक्षण प्राप्त था क्योंकि यह प्रेस भारतीयों को उनकी आकांक्षाओं, शिकायत, राजनीतिक मामलों पर भारतीय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे | उनमें से कुछ समाचार पत्रों ने वास्तव में भारतीयों को विभाजित करने की कोशिश की और जब दो प्रमुख समुदायों द्वारा एकता का प्रयास किया गया तब एंग्लो इंडियन संपादकों द्वारा उन पत्रों में निंदा की गई | क्यूंकि एंग्लो इंडियन संपादको को भारतीय प्रेस पर विशेष अधिकार प्राप्त थे, इसलिए भारतीय मुद्दों पर छापने वाले संपादक अथवा प्रकाशक को थोड़े से बहाने पर भी दंडित किया जाता था | लेकिन एक ही तरह के लेखन के लिए यह और भी अधिक कड़वा साम्राज्यवादी और नक्सलवादी हो सकता है क्योंकि एंग्लो इंडियन अखबारों में छपे लेखों के बावजूद उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जाती थी जबकि आधिकारिक समाचार देने में सरकार ने एंग्लो इंडियन प्रेस का पक्ष लिया | मुंबई में टाइम्स आफ इंडिया, कोलकाता में स्टेटस मैन, एंड द इंग्लिश मैन, इलाहाबाद में पायनियर और मेल एंड टाइम्स मद्रास में प्रभावशाली एंग्लो इंडियन आबादी के पत्र थे जिन्हें व्यापारियों और बागवानों की श्रृंखला द्वारा प्रत्यक्ष रूप से सरकार द्वारा खरीद और विज्ञापन के माध्यम का समर्थन प्राप्त

था | उनमें से द पायनियर ने सबसे पसंदीदा स्थान हासिल किया यह समाचार पत्र न केवल सरकार द्वारा समर्थित बल्कि सिविल सेवा के हितों की भी वकालत करता था।

एंग्लो इंडियन द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले पत्रों के अलावा भारतीय स्वामित्व वाले विभिन्न समाचार पत्र भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित होते थे | 1900 से 1913 की अवधि के बीच भारतीय प्रेस की अभूतपूर्व वृद्धि हुई | सुरेंद्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मित्र, घोष बंधु,रामानंदटर्जी, कमल कृष्ण भारत, अचार्य अरविंदो घोष, गंगाधर तिलक और केलकर, फिरोजशाह मेहता, एमजी रानाडे, गंगा प्रसाद वर्मा , रामपाल सिंह चिंतामणि, मोहम्मद अली, जफर अली खान, मौलाना आजाद, सुब्रमण्यम भारती, कस्तूरी रंगा, सुब्रमण्यम अय्यर, सच्चिदानंद सिन्हा, बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी जिन्होंने भारतीय प्रेस को शक्तिशाली संस्था बना दिया था | भारतीय संपादको द्वारा प्रकाशित पत्रों ने भारत में जनमत को आकार देने एवं आन्दोलन तैयार करने और गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई |

अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र शिक्षित अभिजात वर्ग की जरूरत को पूरा करते थे कुछ नेताओं ने दो प्रकार के अखबारों की आवश्यकता महसूस की एक जो बुद्धिजीवी वर्ग की रुचि को पूरा कर सके जैसे की अंग्रेजी अखबार | दूसरा वह जिन पत्रों का उद्देश्य जनता तक पहुंचना था वह लोगों की मातृभाषा में थे इस प्रकार के समाचार की शैली भाषा और तर्क सीधे सरल और लोगों की समझ में आने योग्य होते थे तथा संपादकीय में सरलता एवं सूक्ष्मता का मिश्रण था यह व्यापक जनता तक पहुंचने एवं अर्थ बताने और ब्रिटिश शासन के प्रति तकनीकी वफादारी बनाए रखने के लिए किया गया था | इससे ब्रिटिश सरकार की आलोचनाओं को चरम सीमा तक फैलाने में मदद मिली | परन्तु ब्रिटिश सरकार ने इन पत्रों संदेश को व्यापक सामाग्री तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संचार के महत्वपूर्ण वाहन के रूप में महसूस किया | क्योंकि यह पत्रिकाएं राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक, आकांक्षाओं के जमीनी स्तर से सूचना केंद्र के रूप में कार्य करती थी | तिलक का केसरी, सुब्रमण्यम का स्वदेश मित्रम, मालवीय का अव्युदमय और इसी तरह के पत्र भारतीय भाषाओं के अच्छे उदाहरण थे जिन्होंने जनता को जागृत किया एवं उनकी भावनाओं को पत्रों में आकर्षित किया | यह अखबार राष्ट्रीय आवाजों का एक समूह बन गया जिन्होंने बढ़ती सफलता के साथ प्रतिस्पर्धा के इस दौर में लोगों को न केवल समाचार दिए बल्कि विचार और कुछ हद तक आत्मविश्वास भी पैदा करने का कार्य किया | इस प्रकार कोलकाता क्षेत्र में अमृत बाज़ार पत्रिका और बंगाली, लाहौर में ट्रिब्यून और मद्रास में हिंदू जैसे पत्रों के प्रारंभिक केंद्र का प्रतिनिधित्व करते थे और इन पत्रों को उन लोगों द्वारा संपादित किया गया जिन्होंने अखिल भारतीय संदर्भ में घटनाओं को देखा और फिर लिखा था |

स्वंत्रता आन्दोलन से संबधित समाचार पत्र :- ए.आर.देसाई ने अपनी पुस्तक " भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि" में वर्णित समाचार पत्र जिसके माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास को गति मिली जिसमें स्टेट्स मेंन, द टाइम ऑफ़ इंडिया, द पायनियर ,द मद्रास मेल ऐसे पत्र थे जिसमें भारत में अंग्रेज सरकार और प्रशासन के विचार और कार्रवाइयों को लेकर प्रकाशन किया जाता था | इस तरह अमृत बाज़ार पत्रिका, बॉम्बे क्रॉनिकल, द हिंदुस्तान टाइम्स, द हिंदुस्तान स्टैंडर्ड, हरिजन, नेशनल हेराल्ड अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाले प्रमुख राष्ट्रवादी दैनिक और साप्ताहिकी थे। पत्र द हिंदू, द लीडर,द इंडियन, सोशल रिफॉर्मर, द मॉडर्न रिव्यू ऐसे प्रमुख उत्कृष्ट जनरल थे जिन्होंने राष्ट्रवाद के उदारवादी स्कूलों का समर्थन किया | मोटे तौर पर राष्ट्रवादी अखबारों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रम और नीतियों का समर्थन किया वहीं उदारवादी अखबारों ने आलोचनात्मक रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया। जबकि डॉन नामक पत्र मुस्लिम लीग के विचारों का प्रतिनिधित्व करता था। देश के विद्यार्थी संगठनों ने स्टूडेंट और साथी जैसे पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। देश के कई हिस्सों में प्रेस का भी तेजी से विस्तार हुआ | अमृत बाजार पत्रिका, बंगभाषी, मराठी में केसरी,गुजराती में बॉम्बे समाचार, हिंदुस्तान और प्रजा मित्र, संदेश और वंदेमातरम मलयालम में मातृभूमि तमिल में स्वदेशी मित्रम देश के विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होने वाले प्रमुख अखबार और साप्ताहिक थे | उर्दू में इतिहास अजमल,हमदम, खिलाफत, तेज और रियासत कुछ प्रमुख अखबार और पत्रिकाएं थी। वीर ,अर्जुन आज, सैनिक, और विश्वामित्र ,हिंदी के प्रमुख प्रकाशक थे। इन सभी पत्रों के माध्यम से राष्ट्रभक्ति से प्रेरित अग्रदूतों ने राजनितिक कार्यक्रमों एवं नीतियों को आम जन तक पहुँचया |

प्रेस से संबंधित पत्रकार :-

राजा राममोहन राय :- आधुनिक भारत के पुनर्जागरण का जनक राजा राम मोहन राय को माना जाता है उन्होंने तीन भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित किए जिसमें अंग्रेजी, बंगाली और उर्दू ,इतना ही नहीं बल्कि लेखन और अन्य गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने भारत में स्वतंत्र प्रेस के लिए सक्रिय रूप से समर्थन और संघर्ष किया। 1778 में प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार हुआ और राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया तथा ब्रिटिश सरकार ने उस समय भारतीय समाचार पत्रों को नियंत्रित किया। लेकिन ऐसे में उन्होंने प्रेस की आजादी के लिए आंदोलन चलाया। राजा राममोहन ने तीन पत्रिका प्रकाशित की ब्राह्मण पत्रिका, बंगाली साप्ताहिक संवाद कोमौदी, फारसी साप्ताहिक मीरात -उल -अखबार इन पत्रिकाओं ने आंदोलन को सही दिशा में ले जाने में भूमिका निभाई। बंगदूत एक अनोखा प्रकाशन था जिसमें बांग्ला हिंदी और फारसी भाषाओं का एक साथ प्रयोग किया गया था। 1821 में नारायण दास नाम के एक व्यक्ति को ब्रिटिश कोड करने के रूप में मौत की सजा सुनाई थी। राजा राममोहन राय ने बर्बरता की निंदा करते हुए लेख प्रकाशित किया था उनके प्रयासों से भारतीय पत्रकारिता को मजबूत आधार मिला साथ ही भारतीय पत्रकारिता को नया आयाम भी मिला।

एम.मोतीवाला :- बम्बई में जाम- ए-जमशेद दैनिक गुजराती पत्र (1831) का प्रकाशन किया गया। गुजराती में दो अन्य अखबारों रास्त गुफ्तार और अख़बार- ए- सौदागर का 1851 में प्रकाशन हुआ।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर :- राष्ट्रवादी और समाज सुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने 1858 में बंगाली में "सोम प्रकाश" पत्र का प्रकाशन राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से किया गया था। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य 1860 में बंगाल के नील के उत्पादन के लिए ब्रिटिश सरकार किसानों का उत्पीड़न, बंगाल के क्षेत्रों में अशांति उत्पन्न हुई तथा इस पत्र में किसानों के हितों को उजागर किया गया।

तिलक :- जी.जी. आगरकर के साथ तिलक ने 1881 में मराठी भाषा में 'केसरी ' तथा अंग्रेज़ी भाषा में ' मराठा' नाम से अखबारों का प्रकाशन शुरू किया। 1888 में इन पत्रों का सपादंन तिलक के हाथों में आ गया था जिसके बाद उन्होंने इन अखबारों के जरिये ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनता में जागरूकता पैदा करना शुरू किया। तिलक निडर, साहसी पत्रकार थे उन्होंने इन पत्रों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को गति देने के लिए जनता को प्रेरित करने का काम किया।

माखनलाल चतुर्वेदी :- ने 17 जुलाई, 1920 को " कर्मवीर" पत्र का संपादन शुरू किया। पत्रकारिता और साहित्य के माध्यम से राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार के लिए अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के लिए अपनी पत्रिका " प्रभाव" का संपादन किया। 1913 में माखनलाल चतुर्वेदी ने पत्रकारिता साहित्य एवं राष्ट्रीय आंदोलन के लिए खुद को समर्पित करने के लिए अपने शिक्षक पद से इस्तीफा दे दिया। उनकी पत्रिका प्रभाव उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिका थी जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया। इस पत्रिका में लोगों को जागृत करने वाली रचनाओं तथा महात्मा गांधी के 1920 के असहयोग आंदोलन से संबधित कई लेख प्रकाशित थे। कर्मवीर पत्रिका में उन्होंने रियासतों तथा असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, रोलेट एक्ट, स्वदेशी राज्य, हिंदू -मुस्लिम भेदभाव, क्रांतिकारी आंदोलन,गरम व नरम दलों जैसे कई विवादास्पद मुद्दों को कर्मवीर में प्रकाशित किया जिसके परिणामस्वरुप वह ब्रिटिश शासन की आंखों की किरकरी बन गए थे और उन्हें गिरफ्तार किया गया। महात्मा गांधी और गणेश शंकर विद्यार्थी दोनों ने यंग इंडिया और प्रताप के साथ-साथ देशभर के समाचार पत्रों में उनकी गिरफ्तारी की निंदा करते हुए कठोर संपादकीय लेख लिखें। माखनलाल ने प्रभाव, प्रताप और कर्मवीर पत्रिका के माध्यम से देश भर में जागरूकता लाने के लिए अथक प्रयास किया।

अजीमुल्ला खान :- ने "पायाम-ए- आजादी" नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया जिसका उपयोग क्रांति फैलाने के लिए किया करते थे। अजीमुल्ला खान ने पायाम- ए-आज़ादी प्रकाशन के माध्यम से सन 1857 की क्रांति की रणनीति तैयार की। यह अखबार हिंदी, उर्दू और मराठी में प्रकाशित होता था। **न्यू इंडिया समाचार पत्र (2022) में प्रकाशित "क्रांति की अलख जगाई"** में वर्णित लेख में उल्लेखित है की अज्ज़ीमुला खान ने " हम हैं इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा, पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा" यही गीत बाद में सन 1857 की क्रांति का झंडा गीत बन गया और 1857 क्रांति के आदर्श और लक्ष्य को यह गीत खूब दर्शाता है इस गीत के माध्यम से उन्होंने 1857 की क्रांति में जनता के पक्ष पर जोर दिया।

गौरी शंकर राय :- ने उड़िया में पहली पत्रिका "उत्कल दीपिका" प्रकाशित की जिसमें उन्होंने 1866 में उड़ीसा में पड़े अकाल में अंग्रेजों को बेनकाब करने और उड़ीसा के युवाओं को शिक्षित करने के लिए लेख लिखें ऐसे में गौरी शंकर राय और बाबू विचित्र आनंद दास ने उड़िया में उत्कल दीपिका का प्रकाशन शुरू किया इसके परिणामस्वरुप लोग अधिक जागरूक हो गए और उन्हें अकाल असली कारण समझ आने लगा | इस पत्रिका में राज्य में अकाल और गरीबी के बारे में लेख प्रकाशित करना शुरू किया | गौरी शंकर राय ने राष्ट्रवाद पर आधारित इस पत्रिका के माध्यम से भारतीयों के हित में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी इसके बाद उनसे प्रभावित होकर शशि भूषणरथ ने 1913 में बहरामपुर से एक दैनिक उड़िया पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया और उड़िया साहित्य में उसे बढ़ावा देने के लिए गोपबंधु दास ने "सत्यवती" नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया ।

स्वंत्रता आन्दोलन में प्रेस की भूमिका :- प्रेस के द्वारा न केवल बंगाल एवं तमिलनाडु में बल्कि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक कई तरह के परिवर्तन लाए | इसीलिए प्रेस को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का दर्पण माना गया है | आधुनिक समय में प्रेस वास्तव में वैचारिक आधार स्थापित करने में काफी हद तक सफल रहा | क्योंकि प्रेस ने विशेष रूप से स्थानीय भाषा में एक शक्तिशाली मीडिया के रूप में काम किया जिसके माध्यम से व्यक्तियों संगठन और संस्थानों न केवल अपने विचारों विचारधाराओं आदि का आदान – प्रदान किया बल्कि कम समय अवधि में नई घटनाएं भी तैयार की जिन्होंने आन्दोलन को गति प्रदान की | प्रेस ने एक शक्तिशाली दर्पण के रूप में कार्य किया और समाज तथा सामाजिक संस्था जो अक्सर व्यक्तियों के दृष्टिकोण को प्रतिबंधित करती है वही कार्य प्रेस ने भी किया | प्रेस न केवल राष्ट्र राज्य की नींव रखी बल्कि राष्ट्रवाद धर्मनिरपेक्षता और जनपक्षधरता की भावनाएं पैदा की | प्रेस के सहयोग एवं सहायता से कई आंदोलन, सम्मेलन बैठके एवं सभा आयोजित की जाती थी तथा कई विवादों का निपटारा और संस्थाओं का निर्माण तथा कार्यक्रम एवं नीतियां को जनता तक प्रेस के माध्यम से ही पहुंचाया जाता था |

सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव :- प्रेस का भारत में राजनीति के उद्भव के साथ एक आकस्मिक संबंध था एक तरफ प्रेस ने सामाजिक जागृति के विकास को प्रभावित किया वहीं दूसरी ओर राजनीतिक चेतना के प्रसार को भी संभव बनाया। प्रेस ने विशेष रूप से आम विचारों और विचारधाराओं को उसमें साझा किया क्यूंकि यह लोगों के लिए सबसे प्रभावी जन माध्यम था दूसरी ओर भारतीय प्रेस का स्वरूप समकालीन राजनीति से भी प्रभावित था। भारतीय राजनीतिक परिदृश्य का ऐसा कोई पहलू नहीं था जिसके बारे में देशी प्रेस के द्वारा विस्तार से चर्चा नहीं की गई हो। इसके अलावा भारतीय समाज की भूमिका को भी इमानदारी से प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय प्रेस में विभिन्न मुद्दों पर विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं दी। **बिपिन चन्द्र ने अपनी पुस्तक " भारत का स्वंतत्रता संघर्ष" में वर्णित किया है कि "**19वी शताब्दी में अखबारों का असर न सिर्फ सामाजिक क्षेत्र में बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी विशेष रूप से पड़ा बल्कि उनकी पहुंच दूरदराज़ क्षेत्र के गांव तक भी थी हालांकि गांव में कुछ एक व्यक्ति ही शिक्षित होता था परंतु वह अखबार में लिखी बातों को पढ़कर उनकी चर्चा अन्य लोगों से करता था फिर धीरे-धीरे यह लहर पूरे भारत में फैलने लगी। अखबारों में छिपे लेख एक-एक शब्द को लोग बहुत ध्यान से पढ़ते थे या किसी से पढ़कर सुनते थे और फिर उस पर चर्चा करते थे। इस तरह उस समय के अखबार लोगों को सिर्फ राजनीतिक रूप से शिक्षित ही नहीं कर रहे थे बल्कि उन्हें सामूहिक भागीदारी भी सीख रहे थे। अखबारों में छपी सामग्री को लेकर होने वाली चर्चाएं लोगों को सवाल और मुद्दों से जोड़ती थी और उन्हें राजनीतिक भागीदारी का अहसास करवाती थी"। अखबार छापना उस समय व्यवसाय नहीं था और न ही उससे किसी तरह का कोई आर्थिक मुनाफा कमाने की गुंजाइश थी। देश या समाज की सेवा के लिए अखबार

प्रकाशित होते थे | पत्रकारिता में आमतौर वही लोग आते थे जो राजनीतिक कार्यकर्ता होते थे और हर तरह के त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहते थे हालांकि अखबार लगातार चलते रहने के लिए संपादक को आमतौर पर कई परेशानीयों गुजरना पड़ता था लेकिन अखबार शुरू करने के लिए बहुत ज्यादा पैसों की जरूरत नहीं होती थी।

18वी एवं 19वी शताब्दी का समय ऐसा था जब भारत में चेतना और जागरूकता की लहर फैलना शुरू हो गई थी लेकिन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सामूहिक भागीदारी निभाने वाले लोगों का स्वरूप पूरी तरह नहीं उभर सका था। क्योंकि उस समय जनता को मुद्दों और सवालों से जोड़ने के लिए छोटी-मोटी सभाओं का सिलसिला शुरू हो चुका था और परन्तु ऐसा कोई राजनीति कार्यक्रम सामने न आ सका जिससे जनता की भागीदारी हो सकती और जिसे जन संघर्ष का रूप दिया जा सकता था। उस समय सबसे पहले राजनीतिक कार्यक्रम यही था कि जनता का राजनीतिकरण किया जाए तथा राजनीतिक चेतना का प्रचार प्रसार किया जाए अपने अधिकारों के प्रति लोगों को शिक्षित किया जाए और राष्ट्रीय विचारधारा का प्रसार किया जाए क्योंकि उसे समय भारतीय जनता के पास ऐसा कोई संगठन नहीं था और न ही कोई संगठित राजनीतिक कार्यक्रम सामने आया था। इसलिए प्रेस ही उसे समय का ऐसा हथियार था जिसने जिसके जरिए जनता को राजनीतिक रूप से शिक्षित प्रशिक्षित किया जा सकता था और राष्ट्रीय विचारधारा के रूप में इकट्ठा किया जा सकता था इस प्रकार ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष की शुरुआती दौर में कई ऐसे निडर अखबारों ने जन्म लिया जिन्होंने गांव तक सीमित न होकर बल्कि अपनी पहुंच दूर- दराज के क्षेत्र तक भी जागृति पहुंचाई |

निष्कर्ष :-

निसंदेह भारतीय प्रेस अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में एक अति महत्वपूर्ण स्तंभ था। क्योंकि प्रेस ने ब्रिटिश सरकार की नीतियों की आलोचना करना और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को अपना उद्देश्य रखा था। भारतीय प्रेस के बिना यह संभव नहीं था कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के महत्वपूर्ण नेता इतने बड़े पैमाने पर अपने विचारों को जनता तक फैलाएं एवं ब्रिटिश सरकार की नीतियों की कड़ी आलोचना कर पाए । परंतु प्रेस ने इन नेताओं के विचारों को सक्षम बनाने तथा आंदोलन को संगठित करने एवं विभिन्न संस्था एवं सभाओं का आयोजन करने और लोगों को एकजुट करने तथा उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागृत करने में भूमिका निभाई। जहां तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का संबंध है तो प्रेस ने दिग्गज नेताओं को जन्म दिया और समाचार पत्रों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधारो और राजनीतिक स्वतंत्रता से संबंधित अनेक मुद्दों पर लेख लिखे जिसके माध्यम से लोगों का ध्यान केंद्रित किया और उन्हें उनके आर्थिक,सामाजिक, राजनीतिक एवं जनमत को सूचित करने में अखबारों ने अहम भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची :-

1. डिसूजा,युनिन, आधुनिक भारत का इतिहास : समाज और अर्थव्यवस्था, मनन प्रकाशन,2016.
2. चन्द्र, बिपिन, मृदुला मुखर्जी, महाजन सुचेता, भारत का स्वंत्रता संघर्ष,दिल्ली,2015.
3. चन्द्र, बिपिन,आधुनिक भारत,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युट,नई दिल्ली,2019
4. देसाई,ए.आर, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, सेज पब्लिशर्स ,2018,पृष्ट संख्या146.
5. परुथी,आर.के, आधुनिक भारत (1919 -1939): संवेधानिक सुधार एवं साम्प्रदायिकता का विकास, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,2017.
6. भारतीय स्वंतत्रता आन्दोलन का इत्तिहास ,ओमेगा पब्लिशर्स,नई दिल्ली,2010.
7. मजुमदार,आर,सी, भारतीय स्वंत्रता संग्राम का इतिहास, वॉल्यूम 1,कलकत्ता ,1963.
8. अय्यर, विश्वनाथ , भारतीय प्रेस,मद्रास,1945.
9. मजूमदार,अम्बिका चरण, भारतीय राष्ट्र का विकास, मद्रास, 1915.
10. चटर्जी, ए.सी, भारतीय स्वंतत्रता का संघर्ष,1947.
11. अयंगर,रामास्वामी, भारत में समाचार पत्र, बेंगलोर,1933.
12. सिंह,उपिन्दर,प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,पियर्सन पब्लिशिंग,पृष्ट संख्या 369.

13. शुक्ल,रामलखन,आधुनिक भारत का इतिहास,दिल्ली,2003.
14. Vernacular press act and Role of Press in India's Struggle for Freedom (suchak-indian.blogspot.com)